PAPER - III

छायावाद

PAGE NO :
DATE : / /200

"छायावादी मुक्त कल्पना,
गद्यबद्ध बन गल्प जल्पना,
शाब्दिक रंगोली उतारकर,
अनगिन बिम्बों को उभारकर,
रचती नव अल्पना
शारदा के आँगन में।" — पंत (वाणी)

छायावाद एक ऐसी सर्वव्यापक, सर्वात्मवादी तथा मानवतावादी साहित्यिक चेतना है जो जीवन तथा जगत की जड़ता, इतिवृत्तात्मकता तथा स्थूलता के विरुद्ध भाव के स्तर पर वैयक्तिक स्वातंत्र्य एवं आत्मनिष्ठा का उद्घोष करती है। छायावाद का उत्थान सन् 1920 ई० के आसपास हुआ है। छायावाद के ठीक पहले जो साहित्यिक काल था उसे द्विवेदी काल कहा जाता है। द्विवेदी युग में काव्यभाषा के रूप में खड़ीबोली को प्रतिष्ठा तो मिली किन्तु उसके स्वरूप को निखारने का श्रेय छायावादियों को ही है। छायावाद से पहले खड़ीबोली का काव्य भाव तथा भाषा की दृष्टि से निर्धन ही रहा। द्विवेदी युग में मुख्यतः इतिवृत्तात्मक कविताएँ ही लिखी गईं। उन कविताओं में वस्तुओं और व्यापारों का चित्रण ही सामने आया। तत्कालीन भाषा में सौन्दर्यबोध का अभाव दिखाई पड़ा साथ ही माधुर्य का भी। मूल कारण यह था कि खड़ीबोली अभी काव्य के क्षेत्र में चलना ही सीख रही थी, इसलिए उसमें गहन अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास नहीं हो सका था। मैथिली शरण गुप्त,

की विवृति छायावाद की विशेषताएँ हैं। ('झरना', 'लहर', 'आँसू', 'कामायनी', 'वीणा', 'ग्रंथि', 'पल्लव', 'गुंजन', 'परिमल' आदि छायावादी कृतियों के भीतर से ये विशेषताएँ परिस्फुट हुई हैं।) इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि खड़ी बोली को शब्दों का उचित शृंगार, उन्हें कोमलता छायावाद में ही मिली। द्विवेदी युगीन कविताओं में सौन्दर्यबोध का धरातल अत्यंत निम्न और स्थूल था, उसमें सूक्ष्मता का नितांत अभाव था। (उसे समझने के लिए महावीर प्रसाद द्विवेदी की एक कविता की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं। कोकिल के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा था –

"कोकिल अति सुंदर चिड़िया है,
सच कहते हो यह बढ़िया है।
जिस रंगत के कुँवर कन्हाई,
इसने भी वह रंगत पाई।"

स्पष्ट है कि इस कविता में सौन्दर्यबोध अत्यंत स्थूल है। यहाँ तक कि हरिऔध के 'प्रिय प्रवास' के संध्य-वर्णन में भी स्थूल सौन्दर्यबोध सामने आया है।) सूक्ष्म सौन्दर्यबोध तो छायावाद की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। पंत जी के शब्दों में – "सौन्दर्यबोध – जो रूप-विधान और भावबोध दोनों का प्रतिनिधित्व करता है, वह जैसे छायावादी युग की सर्वोपरि देन है जिसने हमारी रूढ़ि-रीतियों के ढाँचे में बँधे हुए इतिवृत्तात्मक जीवन के विवर्ण मुख से विषाद की निष्प्रभ छाया उठाकर उसपर नवीन मोहिनी डाल दी।" द्विवेदी युग में कल्पना

PAGE NO :
DATE: / /200

कवि किसी भी चीज का यों ही सीधे - सादे शब्दों में वर्णन कर दिया करता था। छायावाद युग में कविता बिम्ब - प्रधान हो गई। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि छायावाद से पूर्व द्विवेदी युगीन कविता में 'सत्य' और 'शिव' के लिए तो पर्याप्त अवकाश था परंतु 'सुंदरम्' के लिए कोई स्थान नहीं था। छायावादी काव्य में इस अभाव को पूरा करने का प्रयास किया गया। छायावादी काव्य की उल्लेखनीय विशेषता है - मानवीकरण। प्रकृति की निर्जीव सत्ताएँ भी छायावादियों की दृष्टि में सजीव प्रतीत होती थीं। प्रायः सभी छायावादी कवियों ने मानवीकरण रूप में प्रकृति को चित्रित किया है। प्रसाद की 'बीती विभावरी जाग री', निराला की 'जूही की कली' और महादेवी की 'वसंत रजनी' आदि ऐसी अनेक रचनाएँ हैं जिनमें प्रकृति को मानवीय रूप में अंकित किया गया है।

छायावादी काव्य में खड़ीबोली ने प्रथम बार भावगौरव को प्राप्त किया। छायावादी काव्य में उच्च कोटि की दार्शनिक भावना तथा देश - प्रेम दृष्टिगत होता है। द्विवेदी युग में कविता के भीतर मुख्य रूप से नैतिक उपदेशों की व्यंजना हुई, किन्तु छायावादियों ने कविता को नारेबाजी और उपदेशात्मकता के धरातल से ऊपर उठाकर उसके माध्यम से गहन भावों की अभिव्यंजना की है। छायावादी काव्य में दार्शनिक गहराई का भी समावेश हुआ। प्रसाद जी बौद्ध दर्शन एवं शैवागमों से, निराला जी

Teacher's Signature

PAGE NO.:
DATE: / /200

मोह कभी नहीं दिखाया। उनकी कविताओं में लक्षणा और व्यंजना के प्रयोग ही देखे जा सकते हैं। इस तरह छायावाद युग में काव्य का भाव-गौरव ही बढ़ा।

अतः यह कथन उचित ही है कि "छायावाद के शिल्प पक्ष में खड़ीबोली ने धीरे-धीरे सौन्दर्यबोध, पदमार्दव तथा भावगौरव प्राप्त कर काव्योचित भाषा का स्थान ग्रहण किया।"